

पाठ-5 कुंती

राजा शूरसेन की पुत्री का नाम पृथा है।

शूरसेन द्वारा कुंतीभोज को वचन के अनुसार पृथा को गोद दे दिया गया और उसका नाम परिवर्तित होकर कुंती हो गया।

ऋषि दुर्वासा ने कुंती की सेवा से प्रसन्न होकर वरदान दे दिया।

कुंती ने उस वरदान के परिणाम को जानने की कोशिश की तो उसे परिणामस्वरूप सूर्य के संयोग से तेजस्वी एवं सुंदर बालक प्राप्त किया ।

लोकनिंदा के डर से कुंती ने उस तेजस्वी बालक को संदूक में बंद करके प्रवाहित कर दिया ।

बहते हुए संदूक को अधिरथ ने देखा और उसमें बंद बालक को घर ले जाकर उसका पालन पोषण किया ।

जन्मजात कवच और कुंडल से शोभित यह बालक कर्ण के नाम से संसार में विख्यात हुआ ।

राजा पांडु ने राजा कुंतीभोज द्वारा सजाए गए स्वयंवर में उपस्थित होकर कुंती से विवाह संपन्न किया ।

भीष्म की सलाह पर महाराज पांडु ने दूसरा विवाह मद्रराज की कन्या माद्री से किया ।

ऋषि के द्वारा मिले हुए शाप के कारण पांडु पुत्र पिता नहीं बन सकते थे ।

अतः कुंती द्वारा प्राप्त वरदान से वन में तीन पुत्रों को कुंती ने और माद्री ने दो पुत्रों को जन्म दिया ।